Course No.- 7B
Course Credit - 02

B.Ed. 2nd YEAR

WOMEN'S TRAINING COLLEGE

PATNA UNIVERSITY, PATNA

PSS – 02

METHODS OF TEACHING HINDI - II

EVALUATION : CONCEPT AND TYPES

Presented By - **Mahadeo Kumar**
Guest Teacher
W.T.C, P.U

मूल्यांकन का अर्थ

मूल्यांकन वह प्रक्रिया है ***जिसके आधार पर हम किसी छात्र के ज्ञान का आकलन करते हैं***। मूल्यांकन के द्वारा ही ***छात्र की किसी विषय में कमियों, उसकी किसी विषय के प्रति रुचि और उसकी प्रतिभा का आकलन किया जाता है।***

मूल्यांकन की परिभाषा

- **क्विलिन व हन्ना** के अनुसार - ***"छात्रों के व्यवहार में विद्यालय द्वारा लाए गए परिवर्तनों के विषय में प्रमाणों के संकलन और उसकी व्याख्या करने की प्रक्रिया ही मूल्यांकन है।"***
- **एम.एन.डन्डेकर** के अनुसार - ***"मूल्यांकन की परिभाषा एक व्यवस्थित रूप में की जा सकती है जो इस बात को निश्चित करती है कि विद्यार्थी किस सीमा तक उद्देश्य प्राप्त करने में समर्थ रहा।"***

मूल्यांकन के उद्देश्य

1. **ज्ञान की जाँच एवं विकास की जानकारी :-** विद्यार्थी निर्धारित पाठ्यक्रम से उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक प्राप्त कर लिए हैं, उससे उनका विकास किस सीमा तक हुआ, विकास में बाधक तत्व कौन-कौन से हैं, इत्यादि की जानकारी करना इनका प्रमुख उद्देश्य है।
2. **अधिगम की प्रेरणा :-** मापन तथा मूल्यांकन द्वारा अधिगम को प्रेरित किया जाता है और पूर्व निर्धारित उद्देश्यों तक पहुँचने का प्रयास किया जाता है।
3. **व्यक्तिगत भिन्नताओं की जानकारी :-** मापन व मूल्यांकन के माध्यम से छात्रों के पारस्परिक भिन्नता की जानकारी मिलती है, जिससे उनके शारीरिक, मनोवैज्ञानिक गुण-दोषों का पता चलता है।
4. **निदान :-** मापन एवं मूल्यांकन का एक प्रमुख उद्देश्य है कि विद्यार्थियों के कमजोर क्षेत्रों की पहचान करके उन्हें आगे बढ़ाने में मदद करता है।

मूल्यांकन के उद्देश्य

5. **शिक्षण की प्रभावशीलता ज्ञात करना :-** मापन तथा मूल्यांकन की सहायता से शिक्षण विधियों की प्रभावशीलता का आकलन किया जाता है।

6. **पाठ्यक्रम में सुधार :-** मापन तथा मूल्यांकन का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यक्रम की उपादेयता की जाँच करके उसकी उपयोगिता को बढ़ाने के लिए पाठ्यक्रम सुधार करना है।

7. **चयन:-** मापन व मूल्यांकन का एक प्रमुख उद्देश्य उपयोगी पाठ्य पुस्तकों व आवश्यकता व योग्यतानुरूप विद्यार्थियों का चयन करने में सहायता प्रदान करना है।

8. **शिक्षण सहायक सामग्री की उपादेयता की जानकारी :-** मापन और मूल्यांकन की सहायता से शिक्षण सहायक सामग्री के उपादेयता की जाँच करते हुए सुधार किया जाता है।

मूल्यांकन के उद्देश्य

9. **वर्गीकरण :-** छात्रों को मापन तथा मूल्यांकन की सहायता से अच्छे, औसत, खराब के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।
10. **निर्देशन :-** मापन तथा मूल्यांकन का उद्देश्य छात्रों को व्यवसाय, शिक्षा इत्यादि के लिए निर्देशन प्रदान करना है।
11. **प्रमाण-पत्र प्रदान करना :-** मापन तथा मूल्यांकन की सहायता से छात्रों को कक्षों के अध्ययनोंपरांत प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाता है।
12. **मानकों का निर्धारण :-** मापन व मूल्यांकन की सहायता से परीक्षण प्राप्तांकों की व्याख्या हेतु प्रासंगिक मानकों का निर्माण किया जाता है।

मूल्यांकन के सोपान

1. **उद्देश्यों का निर्धारण :**
   - सामान्य उद्देश्यों का निर्धारण
   - विशिष्ट उद्देश्यों का निर्धारण

2. **अधिगम क्रियाओं का आयोजन :-**
   - शिक्षण बिन्दुओं का चयन
   - शिक्षण क्रियाओं द्वारा उपयुक्त अधिगम अनुभव उत्पन्न करना
   - व्यवहार परिवर्तन

3. **मूल्यांकन :-**
   - अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन के जाँच हेतु उपयुक्त मापक उपकरणों का चयन
   - मापक उपकरणों का प्रशासन तथा अंकन
   - प्राप्तांकों का विश्लेषण व व्याख्या
   - प्राप्त परिणामों का अनुप्रयोग
   - पृष्ठ पोषण तथा उपचारात्मक कार्यक्रम
   - उपयुक्त अभिलेख तथा आख्या

मूल्यांकन के प्रकार –

मूल्यांकन एक सतत (निरंतर चलने वाली) सकारात्मक प्रक्रिया है जो शिक्षा के उद्देश्यों की सीमा निर्धारित करके शिक्षा प्राप्ति के स्तर को जानकर कर उचित-अनुचित निर्णय लेने में सहायता करती है। इसलिए लिए छात्रों के शिक्षा के स्तर का मूल्यांकन करने के लिए परीक्षा बहुत ही महत्वपूर्ण साधन है। विभिन्न शिक्षाशात्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों के अनुसार मूल्यांकन को बहुत से भागों में विभाजित किया हैं – इसमें से प्रमुख यह चार प्रकार के होते हैं

i. ***परिमाणात्मक मूल्यांकन***
ii. ***गुणात्मक मूल्यांकन***
iii. ***संरचनात्मक मूल्यांकन***
iv. ***योगात्मक मूल्यांकन***

परिणात्मक मूल्यांकन

- **प्रायोगिक परीक्षा :-**मूल्यांकन में प्रयोग विधि का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा का उद्देश्य ही है कि बच्चे कुछ करके सीखें। प्रायोगिक मूल्यांकन को दो भागों में बाँटा जा सकता है-

1. आन्तरिक प्रयोग :- जब किसी सूत्र या अवधारणा को प्रयोगशाला में सामग्री, उपकरण की सहायता से छात्र द्वारा सिद्ध किया जाता है, जिससे उसकी सफलता-असफलता का मूल्यांकन किया जाता है। इसे आन्तरिक मूल्यांकन कहते हैं। यह अधिकतर विज्ञान विषय में किया जाता है।

2. बाह्य प्रयोग :- इस प्रकार के मूल्यांकन को छात्र के जीवन से जोड़कर ज्ञान, सिद्धान्त को व्यवहार रूप में परिवर्तित करने को कहा जाता है जैसे- कुछ दूरी दौड़ना, सत्य बोलना, चित्र बनाना, मिट्टी का कार्य करना आदि। यह मूल्यांकन शारीरिक शिक्षा, गृह विज्ञान, कला, नैतिक शिक्षा, कृषि विज्ञान आदि विषयों में किया जाता है।

- **मौखिक परीक्षा :-** मौखिक परीक्षा का सर्वप्रथम उपयोग ग्लेडाइड्स ने शुरू किया था। मौखिक परीक्षा को यूनान के महान दार्शनिक और पश्चिमी दर्शन के जनक सुकरात ने भी महत्वपूर्ण स्थान दिया था। छात्र के ज्ञान के मूल्यांकन की यह विधि मुख्यतः व्यक्तिगत होती मतलब छात्र को अकेले बुलाकर उससे प्रश्न पूंछे जाते हैं।

- **लिखित परीक्षा :-** वर्तमान समय में लिखित परीक्षाओं के माध्यम से मूल्यांकन का प्रचलन सबसे अधिक है। इस परीक्षा में चार प्रकार के प्रश्नों को पूछा जा सकता है–

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न
2. अति लघु-उत्तरीय प्रश्न
3. लघु उत्तरीय प्रश्न
4. दीर्घ उत्तरीय या निबन्धात्मक प्रश्न

गुणात्मक मूल्यांकन

- **घटनावृत्त :-** घटनावृत्त शिक्षार्थियों के जीवन की सार्थक घटना का विवरण या कोई ऐसी घटना जो अवलोकन करने वाले की दृष्टि में शिक्षार्थियों के लिए महत्वपूर्ण हो या शिक्षक के द्वारा अनुभव किया गया विभिन्न परिस्थितियों में शिक्षार्थियों का वास्तविक व्यवहार हो सकता है।

- **साक्षात्कार :-** साक्षात्कार विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों में व्यक्तियों से सूचना संकलन का सर्वाधिक प्रचलित साधन है। साक्षात्कार में व्यक्तियों को आमने-सामने बैठाकर विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं। उनके आधार पर उनकी योग्यताओं का मूल्यांकन किया जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का मापन करने के लिए किए जाने वाले साक्षात्कार को मौखिकी के नाम से जाना जाता है।

- **जाँच सूची और स्तर माप :-** जाँच सूची का उपयोग छात्र के प्रयोगात्मक ज्ञान, अभिवृत्तियों, रुचियों, अवधारणाओं और मूल्यों आदि के सम्बन्ध में उपलब्धियों का पता लगाने के उद्देश्य से किया जाता है। जबकि स्तर माप के माध्यम से यह जाना जाता है कि किसी छात्र के कुछ विशिष्ट गुणों ने अन्य छात्र एवं शिक्षकों पर क्या प्रभाव डाला है।

- **अवलोकन या निरीक्षण :-** किसी व्यक्ति या समूह के व्यवहार को कुछ निश्चित समय के लिए देखना और उसके व्यवहार के कुछ बिंदुओं को दर्ज करना अवलोकन है। अवलोकन को सही तरीके से दर्ज करने के लिए अवलोकनकर्ता, चैकलिस्ट, अवलोकन चार्ट, मापनी परीक्षण आदि उपकरणों का प्रयोग करता है।

संरचनात्मक मूल्यांकन

Formative Evaluation

संरचनात्मक से अभिप्राय ***किसी ऐसे शैक्षिक कार्यक्रम योजना प्रकिया अथवा सामग्री आदि के मूल्यांकन से है जिसमें मूल्यांकन के आधार पर सुविधा करना संभव हो।***

दूसरे शब्दों में संरचनात्मक मूल्यांकन किसी शैक्षिक कार्यक्रम योजना प्रकिया की सामग्री की प्रभावशाली गुणवतापूर्ण वांछनीय तथा उपयोगी बनाया जा सके। अत: स्पष्ट है कि संरचनात्मक मूल्यांकन में किसी निर्माणाधीन कार्यक्रम योजना प्रकिया या सामग्री को अंतिम रूप देने से पूर्व उसके प्रारम्भिक प्रारूप का मूल्यांकन किया जाता है जिससे उसकी संरचना गत कमियों को दूर किया जा सके।

अत: स्पष्ट है कि संरचनात्मक मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य शैक्षिक कार्यक्रम एवं सामग्री की कमियों को इंगित करना तथा उन्हें दूर करने के उपाय बताना है। अत: संरचनात्मक मूल्यांकन कर्ता के कार्यों को तीन भागों में बांटा जा सकता है।

1. शैक्षिक कार्यक्रम या सामग्री के विभिन्न अंगों के गुण या दोषों के संबंध में स्पष्ट प्रमाण एकत्र करना।
2. इन प्रमाणों के आधार पर कार्यक्रम या सामग्री की कमियों को सम्मुख रखना है
3. इन कमियों को दूर करके कार्यक्रम या सामग्री को अधिक प्रभावपूर्ण बनाने के लिए सुझाव प्रस्तुत करना है

योगात्मक मूल्यांकन

Summative Evaluation

योगात्मक मूल्यांकन से अभिप्राय है कि ***किसी पूर्व निर्मित शैक्षिक योजना या सामग्री की समग्र वांछनीय को ज्ञात करने की प्रकिया से है।*** दूसरे शब्दों में योगात्मक मूल्यांकन कर्ता किसी शैक्षिक कार्यक्रम योजना या सामग्री के गुण व दोषों की जानकारी इसलिए एकत्रित करता है जिससे उस कार्यक्रम को स्वीकार करने या भविष्य में जारी रखने के संबंध में निर्णय लिया जा सके।

- मूल्यांकन विधि की उपयोगिता संबन्धी जानकारी करने हेतु साक्षात्कार योजना, प्रश्नावली अथवा श्रेणी मापनी आदि उपयुक्त मानक उपकरण अथवा विधि का निर्माण करता है।
- इसके बाद विशेषज्ञों की सहमती एकत्रित करता है।
- उसके बाद संबंधी मानकों एवं साक्ष्यों की गणना द्वारा उसकी उपयोगिता को परखता है।
- और अंत में यह निर्णय करता है कि यथा शिक्षा नीति, योजना अथवा कार्यक्रम, पाठ्य वस्तु शिक्षण विधि शिक्षण साधन अथवा मूल्यांकन विधि को आगे चालू रखा जाए अथवा नहीं और यदि चालू रखा जाए तो किस रूप में।

साफ जाहिर है कि योगात्मक मूल्यांकन का उद्देश्य किसी पूर्व निश्चित एवं लागू शिक्षा नीति , योजना अथवा कार्यक्रम ,पाठ्य वस्तु शिक्षण विधि , शिक्षण साधन अथवा मूल्यांकन विधि की उपयोगिता की परख करना और उसके आगे चालू रखने अथवा चालू न रखने का निर्णय लेना होता है !